विविधता, असमानता एवं हाशियाकरण
(Diversity, Inquality and marginalisation)

(विविधता)

भारत विभिन्नताओं का देश है तथा प्रत्येक भाग में विविधता का समावेश है। विविधता से तात्पर्य प्राय: भौगोलिक, शारीरिक, सांस्कृतिक धार्मिक आदि में असमानता से है।

इस असमानता के द्वारा ही उपरोक्त सभी तथ्यों में भिन्नता परिलक्षित होती है। ये भिन्नताएं भारतीय समाज के मौलिक आधारों और उनमें होने वाले परिवर्तनों को समझने में सहायक है। इसके साथ हमारे देश में प्रजाति, जाति, जनजाति, धर्म, भाषा, जलवायु, खान-पान आदि के आधार पर भी विविधता दिखाई देती है।

विविधता के प्रकार
(Types of Diversity)

विभिन्न स्तरों के आधार पर विविधता का अलग रूप परिलक्षित होता है।

(i) भाषा स्तर पर विविधता
(ii) सांस्कृतिक स्तर पर विभिन्नता
(iii) क्षेत्रीय स्तर पर विविधता
(iv) धार्मिक स्तर पर विविधता
(v) लैंगिक स्तर पर विविधता
(vi) जाति एवं जनजाति स्तर पर विविधता
(vii) वैयक्तिक स्तर पर विविधता —

Scanned with CamScanner

विविधता के प्रकार -

(1) भाषा स्तर पर विविधता —:

भाषा मनुष्य की अभिव्यक्ति का सबसे शक्तिशाली माध्यम है। प्राकृतिक विभिन्नता के विभिन्नता कारण इस देश में प्रायः दस मील में भाषा और बोली में अन्तर आ जाता है। सन 1991 की जनगणना के अनुसार देश में 1652 भाषाये बोली जाती है।

इरावती कर्वे के अनुसार—

भारतीय समाज में तीन भाषायी परिवार पाये जाते है।

(A) इण्डो - यूरोपीय भाषायी परिवार— इस आर्य भाषा समूह में हिन्दी, पंजाबी, सिन्धी, मराठी, कश्मीरी, राजस्थानी, गुजराती इत्यादि भाषाएं सम्मिलित है।

(B) द्रविड भाषायी परिवार—, द्रविड लोगो की मूल भाषा में तेलगू, कन्नड, मलयालम, तमिल इत्यादि भाषाएं बोली जाती है।

(C) आस्ट्रो - एशियाई भाषायी परिवार —: इसमे मुंडारी, बोडो, खासी, संथाली एवं जुआंग आदि भाषाए बोली जाती।

इतनी अधिक भाषायी विविधता के कारण भाषाओं का वर्गीकरण भी निश्चित नही रह पाता है।

धर्म के आधार पर विविधता -

विश्व के सभी प्रमुख धर्मों के अनुयायी भारत में रहते हैं। इसी कारण यह समाज धर्म की दृष्टि से अनेक वर्गों में विभक्त है।

भारत में प्रमुख रूप से सात धर्म माने गये हैं। हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख ईसाई, जैन, बौद्ध एवं पारसी (अन्य धर्म)। हिन्दू धर्म को मानने वालों की संख्या देश में अन्य धर्मों से अधिक है। हिन्दू धर्म प्रमुख रूप से शैव, वैष्णव के साथ अन्य वर्ग एवं मतों में विभक्त है।

भारतीय मुसलमान दो मतों में विभक्त हैं। शिया और सुन्नी। भारत के ईसाई रोमन कैथोलिक और प्रोटेस्टेण्ट दो भागों में विभाजित हैं। सिक्ख धर्म एकेश्वरवादी है जिसमें एक ही ईश्वर की आराधना की जाती है।

जैन धर्म से अभिप्राय 'जिन' द्वारा प्रणीत धर्म से है। 'जिन' का अर्थ जीतने वाला अर्थात् राग-द्वेष में विजय प्राप्त कर ली हो।

Scanned with CamScanner

जातिगत सामाजिक विभिन्नता

भारतीय समाज मे जाति के आधार पर विविधता हिन्दू संस्कृति की ही देन है। परन्तु प्रायः इसे हिन्दू धर्म के साथ जोड़कर देखा जाता है। आज बड़े शहरो मे यह बन्धन कमजोर हो गये है लेकिन ग्रामीण क्षेत्रो मे ये बेड़ियाँ आज भी लागू है। सामान्य तौर पर जाति (वर्ण) चार भागों मे विभक्त है।

1. ब्राह्मण
2. क्षत्रिय
3. वैश्य
4. शूद्र

इस प्रकार हम देख सकते है, कि 'अछूत' शब्द हिन्दू शास्त्र और संविधान मे निषेध है।

(जनजातीय विविधता)

भारत वर्ष मे आज भी ऐसे मानव समूह है जो आधुनिक सभ्यता से कोसो दूर है। इन्ही को जनजाति अथवा वनवासी, आदिवासी भी कहा जाता है।

इन जनजातियो के खान-पान, रहन सहन, रीति-रिवाज मे अनेक विविधताएं मिलती है। इस समय भारत की अनेक जन-जातियाँ पर-संस्कृतिकरण की प्रक्रिया से गुजर रही है।

Scanned with CamScanner